ISSN - 0973-1628

133

Issue - 133, Vol-XIV(2), April - 2015

www.researchlink.in
www.researchlink.co

Get Sky
& Wings
Give One
Missed Call
& Join
Research
Link

Impact Factor 1.8007 2014

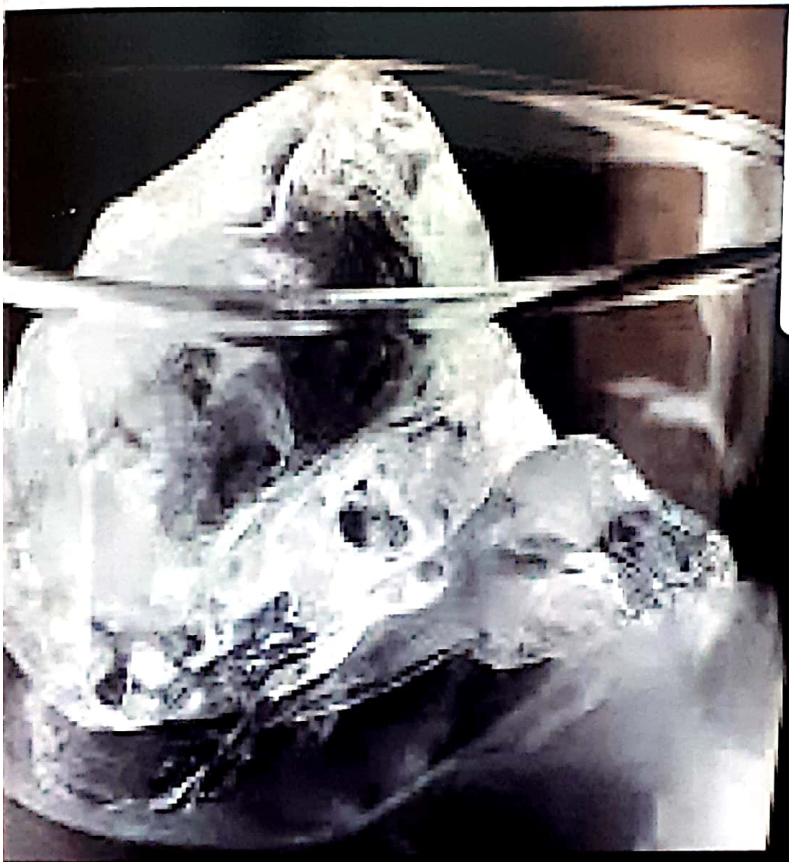

Mob. 88277-45548
R.H. Gautam
Assistant Professor - Sanskrit Department,
Dr. Hari Singh Gour University,
Sagar (Madhya Pradesh)
Sagar (Madhya Pradesh)

~~550 / 132~~

'फ्रिज' में रखा बर्फ हो कि 'भाषा'
इसका मतलब होता है - पानी की मौत।
पानी का पानी हो, या भाषा की आग
दोनों यदि बर्फ बन जाए, तो उस पर नाव नहीं चलती
'फ्रिज' से निकली भाषा, उसके शब्द -
क्रांति-क्रोध / तब्दीली या विकास की बात दूर
गाली देने या
किसी को कोसने के काम भी नहीं आते हैं....

An International Registered and Referred Monthly Journal

RESEARCH Link

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

Scanned by CamScanner

An International, Registered and Referred Monthly Journal - Impact Factor 1.8007 (2014)

Contents - 133

■ Research Link - 133 ■ Vol- XIV (2) ■ April - 2015

Punjabi Exclusive

- ਪਦਮ ਸ਼੍ਰੀ ਹੰਸ ਰਾਜ ਹੰਸ ਦੀ ਸੂਫੀ ਗਾਇਕੀ : ਵਿਭਿੰਨ ਪਰਿਪੇਖ
  ਡਾ.ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ & ਕੁਲਦੀਪ ਕੌਰ ਸੰਧੂ (548).....6

Karnataka Exclusive

- Theme of Confrontation in Arundhati Roy "The God of Small Things"
  Smt Shanthala A.C. (586).....9
- Critical Analysis of The Two Sisters in Mahesh Dattani's Play Bravely Fought The Queen
  Jyothi Keerangi & Dr. S. Venkateshwaran (586(A))...11
- Secularism and Indian Constitution : A Study
  Dyavappa Lalu & Dr.P.B.Rathod (587).....13
- Philosophy of Advaita
  Dr. H.M.Mallikarjunaswamy (602).....15
- Theistic Philosophy of Sri Ramanuja
  Kalyanakumari D. (603).....17
- Conception of Bondage and Liberation in Advaita Vedanta
  Shivashankara S. (604).....19

Gujarat Exclusive

- ધોરણ ૧૨ માં અભ્યાસ કરતાં વિદ્યાર્થીઓમાં ચિંતાનુ પ્રમાણ જાણવું
  Ranch Bhavna D. (592).....21
- Virtual Field Trips
  Dr. Alka Macwan (571).....23
- Factors Affecting Family Generation Through Television Medium in Kutch Region
  Dr. Awa Shukla (564).....25
- Childern With Hearing Impairment
  Bharti V. Oza (584).....27

Science

- Study of Indoor Bacteria on Kirana Dukan
  Vasantrao Pawar (595).....29
- Water Quality of Banihar Dam at Khargone Town (With Special Reference to its impact on Human Health)
  Anita Solanki (H).....31

Coputer Science

- Study of Real Time Operating System
  Swapnil Diwakar Rao Wankhade (609).....33

English Literature

- Major Themes Prevalent in the Select Novels of V.S. Naipaul and Salman Rushdie : A Comparative Study
  Dr. Ravinder Singh & Deepak Dhillon (570).....36
- The Expression of *'Inner Self'* in Virginia Woolf's Mrs. Dalloway
  Manju Rani (561).....39

Hindi Literature

- भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़' : एक विवेचन
  डॉ.विठ्ठलसिंह ढाकरे (461).....41
- संत काव्य एवं लोक-जीवन की अभिव्यक्ति
  डॉ.(श्रीमती) एम.शुक्ला (479).....43
- संजीव के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्या
  डॉ.मधुलिका (512).....45

Sanskrit Literature

- आधुनिक संस्कृत रचनाकार डॉ.हरिदत्त शर्माजी की कृतियों का कला पक्ष
  प्रदीप कुमार (534).....48
- वृक्षों के प्रति देवत्व की अवधारणा
  डॉ.रामहेत गौतम (550).....51

Sociology

- Eco-Tourism as a Vehicle for Local Area Development
  Dr. Sunakar Patra (605).....53
- घरेलू हिंसा - ग्रामीण क्षेत्रों के विशेष संदर्भ में
  डॉ.शारदा गर्ग (535).....56
- छत्तीसगढ़ में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना का स्वरुप एवं विकास
  डॉ.श्रद्धा गिरोलकर एवं कु.मोन्सी वर्गीस (525).....59
- लोकतंत्र में सामाजिक आन्दोलन
  डॉ.जगन्नाथ सिंह (555).....61
- ग्रामीण महिलाओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव
  डॉ.पूजा तिवारी (549).....63

Political Science

- पंचायतराज आणि महिलांचा राजकीय सहभाग
  प्रा.विकास निंबाजी अहिरराव (553).....65
- भारतीय दल-बदल की राजनीति
  डॉ.दिनकर त्रिपाठी (601).....67
- महिला सशक्तिकरण बनाम आधी दुनिया से दूर मानवाधिकार
  डॉ.शशि प्रभा (557).....70
- लोकमत तथा नेतृत्व (भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में)
  डॉ.गरिमा जाउलकर (495).....73
- राष्ट्रीय एकता दिवस : एक सकारात्मक सोच
  डॉ.सुखदेव कुमार (561).....75

History

- Contribution of women and Gandhiji to Satyagrah in India
  Shaina Parmar (582).....76
- 'Godna' (Tattoo) Custom in Gond Tribe
  Dr. Sarita Uike (447).....78
- गोंडवाना क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्थाएँ - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
  डॉ.डिलेश्वर ग्वालवंशी (524).....80
- अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद एवं उनके कार्य
  डॉ.कमलेश शुक्ला एवं श्रीमती हंसा तिवारी (498).....82
- कलिंग युद्ध : धर्मविजय के युग का आरंभ
  प्रा.जितेंद्र सावजी तागडे (574).....84

Geogrpahy

- ठोस अपशिष्ट पदार्थ समस्या (इन्दौर नगर के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.दिवाकर प्रसाद चतुर्वेदी (441).....86

Psychology

- छात्रों पर विभिन्न शिक्षण विधियों के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
  वर्षा धाकड़ एवं डॉ.एन.के.नगाइच (579).....88

Scanned by CamScanner

Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Sanskrit Literature
Research Link - 133, Vol - XIV (2), April - 2015, Page No. 51-52
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2014 - 1.8007

वृक्षों के प्रति देवत्व की अवधारणा

प्रस्तुत शोधपत्र, वृक्षों के महत्व और उनके प्रति देवत्व की अवधारणा पर आधारित है। पर्यावरण स्वच्छ होगा, तो तन स्वस्थ और मन प्रसन्न रहेगा। स्थिर एवं प्रसन्न मन वाले को समाधि सिद्ध होती है। समाधि से युक्त चित्त वाले को ध्यान योग प्राप्त होता है। ध्यान प्रवृत्त (सिद्ध) होने पर वे (मानव) धर्म प्राप्त करते हैं, जिनसे दुर्लभ शान्त, अजर, परम वह अमृत पद प्राप्त होता है। वृक्ष हमारे पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं। जिनसे हमें भोजन व वर्षा के माध्यम से पेयजल, आरोग्य के लिए औषधियाँ, जीने के लिए प्राणवायु प्राप्त होती है। हमें जीवन के सभी तत्व इन्हीं से प्राप्त होते हैं। यही हमारे कल्याण कर्ता देवता हैं। इनकी सुरक्षा व संबर्द्धन से हमें इनकी आराधना करनी चाहिए।

डॉ.रामहेत गौतम

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। यजुर्वेद 31.1

सोते–जागते दूर–दूर तक गमन करने वाला मन जो समस्त ज्ञानेन्द्रियों का नियन्ता है, वह मेरा मन कल्याणकारी विचारों वाला हो।

सभी के मन भी पवित्र विचारों वाले हों। विचारों व विचार–धाराओं की दुनिया ही संस्कृति है। खान–पान, वस्त्राभूषण, आवास–आरोग्य, सुरक्षा, मनोरंजन, धर्म, दर्शन, पर्व, पूजा सब संस्कृति के अंग हैं। इन सबके केन्द्र में वृक्ष है, जो भोजन के लिए फल, पीने का जल, वस्त्रों का रेशा, आवास के लिए लकड़ी, आरोग्य के लिए औषधि, मनोरंजन–धर्मकर्म–पूजापर्व के लिए पुष्प–फल तथा रम्य वातावरण पेड़–पौधे ही प्रदान करते हैं। ये हमसे बिना कुछ चाहे निरन्तर प्राणवायु, फूल, फल, पत्ती, लकड़ी, गोंद, छाया, छाल, रेशा, वर्षा के माध्यम से पेय जल आदि हमारे जीवन के समस्त तत्व हमें प्रदान करते रहते हैं। अतः पेड़ ही हमारे सच्चे देवता हैं। 'यो ददाति सः देवता'। अतः वट, पीपल, आंवला, तुलसी आदि को देवतुल्य मानकर आज भी पूजा जाता है। अनेक प्रसंगों पर वृक्षारोपण की महिमा का गान हुआ है तथा वृक्षों को काटना पाप माना गया है।

एक वृक्षोहि यो ग्रामे भवेत पर्णफलान्वितः।
चैत्यो भवति निर्ज्ञातिरर्चनीयः सूपूजितः।। (1)

अर्थात् यदि गाँव में एक वृक्ष फल और फूलों से भरा हो, तो वह स्थान हर प्रकार से अर्चनीय है।

मत्स्य पुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के समान बताया गया है।

दशकूपसमावापी दशवापी समोहृदः।
दशहृदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।। (2)

सामाजिक स्तर पर वृक्ष रक्षा के लिए बलिदान का चिपको आन्दोलन तो अभी निकट अतीत का गौरवयी ज्वलन्त उदाहरण है।(3) तथागत गौतम बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति पीपल के वृक्ष के नीचे ही हुई थी। आज भी पीपल को बोधिवृक्ष के नाम से जाना व पूजा जाता है।

कृतप्रतिज्ञो निषसाद बोधये महातरोर्मूलमुपाश्रितः शुचेः।(4)
तुर्यायाम उषःकाले यदा शान्ताश्चराचराः।
अविनाशिपदं ध्याता सर्वज्ञत्वञ्च प्राप्तवान्।। (5)

श्रीमद् भगवद् गीता में भी पीपल के वृक्ष की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए श्री मधुसूदन कहते हैं कि

'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां' (6)

अर्थात् मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ।

वृक्ष–वनस्पतियाँ शिव (कल्याणकारी) हैं

वृक्ष–वनस्पतियाँ (औषधियाँ) को पशुपति (शिव) कहा गया है।(7)

यजुर्वेद अध्याय 16 में शिव को वृक्ष, वनस्पति, वन, औषधि आदि के स्वामी के रूप में वर्णित किया गया है। शिव विषपान करते हैं और अमृत प्रदान करते हैं। वृक्ष–वनस्पति कार्बन डाई–ऑक्साइड रूपी विष को स्वयं पीते हैं और ऑक्सीजन रूपी अमृत (प्राणवायु) हमें प्रदान करते हैं। अतः ये वृक्ष–वनस्पतियाँ–वन शिव के मूर्त रूप हैं।

वृक्षाणां पतये नमः औषधीनां पतये नमः। (8)

वृक्ष प्राणवान (सजीव) हैं, ये हमारी तरह साँस लेते हैं। प्रजनन करते, संवेदना व्यक्त करते हैं। वृक्ष खड़े–खड़े सोते हैं।

महद ब्रह्म येन प्राणन्ति वीरुधः। (9)
अस्थुर्वृक्षा ऊर्ध्व स्वप्नाः। (10)

वृक्षों में रक्षक तत्त्व (प्रतिरोधक क्षमता) है। अथर्ववेद में इस रक्षक तत्त्व के लिए अवितत्त्व शब्द का प्रयोग किया गया है और

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग), डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

Scanned by CamScanner

अंग्रेजी में Chlorophyll है। वृक्ष इस अवितत्त्व से युक्त होने से ही हरे रहते हैं।

आविवै नाम देवता–ऋतेनास्ते परीवृता।
तस्या रूपेणे मे वृक्षा हरिता हरितस्रजः।। (11)

पेड़ों के दस अवयवों का वर्णन करते हुए कहा गया है :

पत्रं पुष्पं फलं शाखा काण्डो दण्डश्च कण्टकाः।
कक्षांकुरश्च मूलानि दशार्धैः खलुपादपः।। (12)

पेड़ प्राणी जगत के उपकारक हैं :

वनस्पतिर्दिवास्वार्धैः कर्ब्बवायुं प्रकर्षति।
मुञ्चति प्राणवायुं च प्राणिनामुपकारकम्।। (13)

वन संरक्षण परम आवश्यक है, क्योंकि वन होंगे तभी हमारा जीवन सम्भव रहेगा, अन्यथा नहीं।

वनेन जीवनं रक्षेत्, जीवनेन वनं पुनः।
मा वनानि नरश्छिन्देत्, जीवनं निहितं वने।। (14)

इसीलिए तो शुक्ल यजुर्वेद 11–45 में द्युलोक, पृथ्वी, अंतरिक्ष को हिंसित (दूषित) न करने के साथ–साथ पेड़ों को न काटने की सीख दी गयी है।

"मा द्यावा पृथिवी अभिशोचीः मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन्।" (15)
मा–ओषधीर्हिंसीः। (16)
अपः पिन्व औषधीर्जिन्व। (17)
मा काकम्बीरम् उदवृहो वनस्पतिम् अशस्तीर्वि हि नीनशः। (18)

वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते हैं, अतः इन्हें न काटें।

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि "मानव चारों ओर से प्राकृतिक दशाओं, जैसे वायु, जल, तापमान, मौसम, ताप, वर्षा, आर्द्रता तथा पवन वेग, भूमि की बनावट, वन, खनिज पदार्थों इत्यादि से, तो दूसरी ओर सामाजिक ढांचा, संस्था समूह और रीति–रिवाज व मान्यताओं आदि से जुड़ा हुआ है। जब सामाजिक, प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक तीनों दशायें पूर्णरूपेण समन्वित होकर मानव को घेरती हैं, तो वह घेराव ही पर्यावरण कहलाता है।

आज इस बात की महती आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पर्यावरण को बखूबी जाने और उसे दूषित न करे, साथ ही उसके संरक्षक के उपाय भी अपनाये। बुद्धचरित में महाकवि अश्वघोष ने भी इसी आशय के संकेत दिए हैं

स्वस्थ्य प्रसन्नमनसः समाधिरूपपद्यते।
समाधियुक्त चित्तस्य ध्यानयोगः प्रवर्तते।। (19)
ध्यानप्रवर्तनाद्धर्माः प्राप्यन्ते यैरवाप्यते।
दुर्लभं शान्तमजरं परं तदमृतं पदम्।। (20)

पर्यावरण स्वच्छ होगा, तो तन स्वस्थ्य और मन प्रसन्न रहेगा। स्थिर एवं प्रसन्न मन वाले को समाधि सिद्ध होती है। समाधि से युक्त चित्त वाले को ध्यान योग प्राप्त होता है। ध्यान प्रवृत्त (सिद्ध) होने पर वे (मानव) धर्म प्राप्त करते हैं, जिनसे दुर्लभ शान्त, अजर, परम वह अमृत पद प्राप्त होता है। वृक्ष हमारे पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं। जिनसे हमें भोजन, इनकी सहायता से ही वर्षा के माध्यम से पेय जल, आरोग्य के लिए औषधियाँ, जीने के लिए प्राणवायु प्राप्त होती है। हमकों जीवन के सभी तत्व इन्हीं से प्राप्त होते हैं। यही हमारे कल्याण कर्ता देवता हैं। इनकी सुरक्षा व सम्वर्धन से हमें इनकी आराधना करनी चाहिए।

वृक्षाणां पतये नमः औषधीनां पतये नमः।

संदर्भ :

(1) उद्धृत, योजना जून 2004, पृ. 22–23.
(2) मत्स्य पुराण।
(3) पर्यावरण जैविकी एवं विष विज्ञान।
(4) बु.च. 12/119.
(5) बु.च. 14/89.
(6) श्रीमद् भगवद्गीता।
(7) शपतथ ब्राह्मण 6.1.3.12.
(8) यजुर्वेद 16.17.
(9) अथर्ववेद 1.32.1.
(10) अथर्ववेद 1.44.1.
(11) अथर्ववेद 10.8.31.
(12) उदधृत, यू.जी.सी संस्कृत उपकार प्रकाशन, पृ. 325.
(13) उदृधत, यू.जी.सी. संस्कृत नेट, पृ. 325.
(14) उदृधत, यू.जी.सी. संस्कृत नेट, पृ. 325.
(15) शुक्लयजुर्वेद 11.45.
(16) यजुर्वेद 6.23.
(17) यजुर्वेद 14.18.
(18) ऋग्वेद 6.48.17.
(19) बु.च. 12/105.
(20) बु.च. 12/106.

❁❁

Scanned by CamScanner